-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-
-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-

: अध्याय दूसरा :

: 'अलग-अलग रास्ते' कथावस्तु तथा नाटक में वैवाहिक जीवन सम्बन्धी समस्यायें :

-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-
-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-

अध्याय दूसरा

` अलग-अलग रास्ते ` कथावस्तु तथा नाटक में वैवाहिक जीवन सम्बन्धी समस्याएँ

प्रास्ताविक:

उपेन्द्रनाथ ` अश्क ` हिन्दी के यथार्थवादी नाटककारों में अग्रगण्य हैं। अपने नाटकों में उन्होंने अपनी सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि और प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया है। उनके नाटकों की रचना के समय भारतीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के प्राध्यापक तथा छात्रगण पाश्चात्य यथा यथार्थवादी नाटककारोंसे परिचित हो चुके थे। ` अश्क ` का जागरूक कलाकार बदलते हुए परिवेश और नवीन सामाजिक दृष्टि की ओर से आँख मूँद ले यह असंभव है। साहित्यकार का प्रमुख दायित्व युगजीवन के अनुरूप साहित्य सृजन करना है। इसी कारण अश्क के ` अलग अलग रास्ते ` पर पाश्च्यात्य नाटकों का प्रभाव दिखाई देता है।

कथावस्तु - ` अलग अलग रास्ते `:

नाटक की वस्तु रचना करते समय मुख्यत: दो तत्वोंका होना अनिवार्य होता है - (१) कथावस्तु और (२) पात्र। कथावस्तु में एक ओर जीवन की क्रियाशीलता है, तो दूसरी ओर चरित्र का विकास भी है। चरित्र का विकास कार्योंद्वारा होता है, तब उसका स्वरूप समझ में आता है। और इसके लिए पात्रों का होना बहुत जरूरी है। तात्पर्य यह कि, घटनाओंका सम्बन्ध मानव जीवनसे यदि हो, तो ही नाटक की वस्तु के रूपमें उसे स्वीकार किया जाता है।

कथावस्तु नाटक की आधारशिला है। जिस प्रकार नीव यदि पक्की हो, तो मंजिल भी मजबूत बनती है, उसी प्रकार कथावस्तु ही नाटक की आधारशिला है। इसलिए कथावस्तु सुगठित, सुस्पष्ट होनी चाहिए। उसका सम्बन्ध हमारे जीवन से यदि होगा, तो वह कृति या रचना और भी उत्कृष्ट बनती है। नाटक में प्राय: अधिकारिक और प्रासंगिक दोनों कथाओं का

समन्वय मिलता है । इन दोनों कथाओंपर ही नाटक की महत्त्ता निर्धारित होती है । इनमें परस्पर सुसंबध्दता तथा उद्देश्य प्राप्ति की दिशा का योग्य होना आवश्यक है ।

उपेन्द्रनाथ अश्कजी का एक सफल समस्या - नाटक है - ` अलग अलग रास्ते ` ।

` अलग-अलग रास्ते ` की अधिकारिक कथा रानी के दाम्पत्य जीवन की है । प्रासंगिक कथा के रूप में उसकी बहन रानी की कथा प्रस्तुत की गयी है । यद्यपि इस कथा का स्वतंत्र अस्तित्व भी है, पर उसका मूल उद्देश्य अधिकारिक कथा को निखारना है । उपेन्द्रनाथ अश्क ने इन दोनों कथाओं का संयोजन इस प्रकार किया है कि प्रेक्षक को मूल उद्देश्य तक पहुँचने में तनिक भी असुविधा नहीं होती । नाटक के संघर्ष का आधार नवीन और प्राचीन मूल्य ही हैं । रानी और पूरन नवीनता के आग्रही हैं और उनके पिता पं. ताराचन्द कट्टर रूढ़िवादी । अंतमें वे दोनों घर छोड़कर चले जाते हैं ।

` अलग-अलग रास्ते ` में रानी और राज नामक दो बहनों के असफल दाम्पत्य-जीवन के माध्यम से हिन्दू समाज की विवाह संस्था की त्रुटियों को प्रकाश मे लाया गया है । यह बात नाटक के पात्र पूरन के शब्दों मे -

> ` ब्याह तो आज-कल अँधेरे में तीर मारने के बराबर है,
> निशाने पर लग गया, तो ठीक, नहीं तो हाथ से निकला
> तीर वापस नहीं आता । `
> इस प्रकार व्यक्त हुई है ।[१]

---

१ ` अलग-अलग रास्ते ` , उ.ना.अश्क, पृ.६२ ।

रानी और राज के पिता है ताराचन्द । आपने अपनी बड़ी बेटी रानी का विवाह पं.कुंजबिहारी के बेटे त्रिलोक के साथ कर दिया है । उस समय उन्होंने त्रिलोक को नहीं देखा, यह नहीं सोचा कि वह उसकी बेटी के योग्य वर है या नहीं । बस, केवल इतना ही देखा कि वर का घर सुखी है, इज्जतदार है, पिता रायबहादुर है, बड़ा परिवार है । लेकिन विवाह कोई गुड़िया का खेल थोड़ा ही है, जिससे चाहे बेटी ब्याह दो ? वह तो जनमभर का अटूट बन्धन होता है । तो क्यों न इसे देख-परख कर जोड़ा जायें ?

ताराचन्द ने यह नहीं देखा कि इस इज्जतदार घर में उसकी बेटी की इज्जत होगी या नहीं । यह नहीं देखा कि उस भरे-पूरे संयुक्त परिवार में उसकी बेटी निभ सकेगी या नहीं । शहर में रायबहादूर कुंजबिहारी की कोठियाँ है, यह तो ताराचन्दने सुन रखा था, लेकिन उसने यह जानने की चेष्टा नहीं की, कि इन कोठियोंमे से कितनी गिरवी रखी हुई हैं। विवाह हो जाने के बाद उसे मालूम होता है कि रायबहादूरकी आर्थिक दशा गिरी हुई है । उनकी कोठियाँ गिरवी पड़ी हुई हैं। उनके घर में आदमी तो बहुत हैं, पर वह असलमें भेडियों की माँद है । तीर के हाथ से निकल जाने पर ताराचन्द्र परिताप करते हुए कहता है -

> ' मुझे तो पता ही नहीं चला, नहीं तो मैं कभी रानी का विवाह वहाँ नहीं करता । ' [१]

पं.कुंजबिहारी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, वह कर्ज में डूबा हुआ है । लेकिन तिलक-दहेज की बात के उठाये जाने पर वह झूठी शान में कहता है, कि उसे दहेज की कोई चिन्ता नहीं, भगवान का दिया उसके पास बहुत है । त्रिलोक भी कहता है कि उसे पैसे नहीं चाहिए, बस सिर्फ ऐसी

---

१ अलग-अलग रास्तें, उ.ना.अश्क, पृ.६२

पत्नी चाहिए जिसे देखकर शाम को जब वह कचहरी से लौटे, तो उसे अनुभव हो, कि वह घर पर आ गया है । उसे ऐसी पत्नी नहीं चाहिए, जो घर को ही कचहरी बनाये रखे । लेकिन, रानी जब ससुराल पहुंचती है और त्रिलोक तथा उसके परिवारवाले देखते हैं, कि वह बहुतसा दहेज लेकर नहीं आयी है, तो इस झूठ का पर्दाफाश होता है । रायबहादूर और उनके भरे पूरे परिवार के सदस्य रानी को ताने पर ताने देते हैं, उसे कंजूस बाप की बेटी कहते हैं और तरह-तरहसे अपमानित करते हैं । वही त्रिलोक, जिसे धन की कोई लालसा नहीं थी, रानी का अपमान इसलिए करता है कि, त्रिलोक को मकान और मोटर उसके ससुर की ओर से नहीं मिले । शायद अपना बड़प्पन और ऐश्वर्य-शीलता का रोब जमाने के लिए ही ताराचन्द ने यह मकान और मोटर देने का वादा किया था । लेकिन दोनों ही पक्ष ने एक दूसरे को ठगाया था । ऐसी स्थितिमें रानी और त्रिलोक का दाम्पत्य जीवन भला कैसे सफल होगा ?

पहली बेटी के मामले में धोखा खा जाने के कारण अपनी दूसरी बेटी राजो का विवाह करते समय, ताराचन्दने वर को देखने की जरूरत समझी। और उसने इज्जतदार नहीं, बल्कि उस मदन को पसन्द किया, जो एक गरीब पिता का पुत्र है । उसने सचमुच ही वर और उसके पिता के शील-स्वभाव को ही देखा, उनकी आर्थिक सम्पन्नता को नहीं । मदन कॉलिज में प्रोफेसर है । ताराचन्द के लिए इतना काफी है । वह तो मदन के पिता पं.उदयशंकर के शील-स्वभाव पर ही मुग्ध है । उसके बारेमें वे कहते है -

" मैं लड़के के पिता से मिला हूँ। बड़े सज्जन हैं, अहंकार तो उनमें नाम को भी नहीं। भेंट हुई तो कहने लगे - मैं तो आपको पाकर धन्य हो जाऊँगा। "[१]

ताराचन्द को पं. उदयशंकर की इस बात ने इतना मोह लिया है, कि उसने त्रिलोक के हाथों धोखा खाने के बाद भी मदन की परख नहीं की। लेकिन इसका कारण यह है कि रायबहादुर कुंजबिहारी के इज्जतदार घरमें उसका जितना ही अपमान हुआ है, उतने ही सम्मान पं. उदयशंकर के घरमें होने की संभावना है। लेकिन आगे चलकर सिध्द यही हुआ कि इस बार भी उसने अंधेरे में ही तीर चलाया।

ताराचन्द प्रोफेसर मदन का विवाह के बारे में क्या भाव है यह जानना आवश्यक नहीं समझाता। ताराचन्द उदयशंकर जैसा समधी पाकर धन्य हो गया है। इसीलिए वह मदन पर भी अडिग विश्वास पालता है। वह कहता है - ' मदन गाय है गाय'।[२]

ताराचन्द को यह भी खबर दी जाती है, कि मदन अपनी जाति से बाहर की किसी लड़कीसे विवाह करना चाहता है, लेकिन ताराचन्द इस खबर को सुनना भी नहीं चाहता। वह कहता है -

" पं.उदयशंकर का लड़का अपनी जाति से बाहर कभी विवाह नहीं कर सकता। "[३]

- -

१ ' अलग-अलग रास्ते ', उ.ना.अश्क, पृष्ठ ८९

२ ' अलग-अलग रास्ते ', उ.ना.अश्क, पृष्ठ ८४

३ ' अलग-अलग रास्ते ', उ.ना.अश्क, पृष्ट ९०

हिन्दू समाज इस बातकी आवश्यकता नहीं समझता, कि जिस लड़की की सारी जिन्दगी का सौदा किया जा रहा है, उसकी भी राय ली जाय। हमारे समाज में नारी की स्थिति उस निरीह गाय की सी है, जिसे, उसे पूछे बिना, उसकी इच्छा जाने बिना, कसाई के हाथ में सौंप दिया जाता है। वह कसाई उसे एक झटके में मार दे या तिल-तिल कर उसकी हत्या करे, भूखा मारे या चारे के मरे थानपर बांध दे।[१]

इसीसे ताराचन्द अपनी बेटियों की विवाह के विषय में राय नहीं लेता।

प्रोफेसर मदन अपनी प्रेयसी सुदर्शना से विवाह करना चाहता है। सुदर्शना उसकी जाति की नहीं है। लेकिन मदन को पुरातनवादी पिता पं.उदयशंकर उससे शादी करने नहीं देता। मदन के आगे दो रास्ते हैं, या तो वह समाज की अवहेलना करके सुदर्शना से ब्याह करे अथवा पिता के आज्ञाकारी पुत्र के रूपमें राजो से विवाह करे। अपनी साहसहीनता के कारण मदन को सचमुच 'गाय' ही बनना पड़ा और उसकी शादी राजो के साथ हो गयी। विवाह के बाद वह राजो के आगे स्पष्टत: यह स्वीकार करता है -

> 'मैं कायर हूँ, कायर। माता-पिता के भय से मैंने अपना और तुम्हारा जीवन नष्ट किया।'[२]

वह अपने अतीत का गला घोंट नहीं सकता। इसलिए वह राजो से कहता है -

> 'वह उसकी कल्पना उस मनुष्य के रूपमें करे, जो आत्महत्या करने के प्रयास में पंगु हो गया है।'[3]

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ९१

२ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ७७

३ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ८०

मदन हमारे समाज के उन नवयुवकों का प्रतिनिधी है, जो उससे विवाह नहीं कर पाता, जिससे वह प्रेम करता है और उसको उसके साथ विवाह करना पड़ता, जिसे वह प्रेम नहीं करता। मदन जैसा पढ़ा-लिखा युवक ऐसा साहसहीन हो कि वह अपना जीवन नष्ट करने के साथ साथ दो अन्य व्यक्तियों का भी जीवन बर्बाद करे - एक उस सुदर्शना का, जिससे उसने प्रेम किया है और दूसरी ओर राजो का, जिसे वह ब्याह लाया है - यह सचमुच ही परिताप की बात है। मदन मध्य-वर्ग के उस युवक का प्रतिनिधी है, जो साहपूर्वक विद्रोह नहीं कर सकता। वह खुद मरेगा ही अपने दु:खसे, लेकिन साथ साथ दूसरों को लेकर ही मरेगा और उन्हें भी बरबाद करेगा।

रानी और राज दोनों बहनोंमें चरित्रगत भेद है। रानी पति के घर में पिता की निन्दा सह नहीं सकती। लेकिन राज एक ऐसी लड़की है, जो जानती है अपना पति उसे प्यार नहीं, करता, फिर भी उसके ही चरणोंमें पड़े रहने की निष्ठा निभाती है। उसकी पति-भक्ति देखकर मदन आश्चर्यचकित होता है और कहता है -

> "तुम जाने किस मिट्टी की बनी हुई हो ? तुम्हें स्वाभिमान छू भी नहीं गया ? मै तुमसे इतनी घृणा करता हूँ और तुम मेरे पाँव दबाना चाहती हो।" [१]

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ७९

राज भी नहीं जानती कि ऐसा क्यों है । वह कहती है -

"न जाने क्यों, उनकी घृणा पर मुझे कभी क्रोध नहीं आया । जब जब उन्होंने मुझसे घृणा का व्यवहार किया, मेरे मनमें सदा दया उपजी । सदा जी हुआ, उनके पास जाऊँ, अपने प्यार से उनके घावों को भर दूं ।" [१]

राज की इस निष्ठा को देखकर मदन को अपने प्रति भी असन्तोष होता है । जब कभी राज रोने लगती है, तब वह उसे सात्वना देते हुये बड़े प्यार से कहता है -

" तुम अभागी हो राज, मैं भी अभागा हूं और दर्शना भी ।" [२]

मदन जीवन के साथ समझौता नहीं कर पाता है । न वह दर्शना को भूल पाता है, न राज को ग्रहण कर सकता है । लेकिन वह राज का साथ निभाने का प्रयत्न करना चाहता है । मदन राज से कहता है -

"क्यों न हम अभी कुछ देर दो मित्रों की तरह रहें । धीरे धीरे हम एक दूसरे को समझ जायेंगें । एक दूसरे के गुण दोषों को पहचान लेंगे । फिर हम पति-पत्नी की तरह रहेंगे, पति-पत्नी की तरह ऐसा जीवन जियेंगे, जिसका हर नया दिन थकान और उकताहट लाने के बदले स्नेह और उल्लास लायेगा ।" [३]

लेकिन परिस्थितियोंके साथ मदन का समझौता नहीं हो सकता । पढ़ा-लिखा मदन सुदर्शना के प्रति अन्याय नहीं कर पाया और उसने उसके साथ विवाह कर लिया । राज इस आघात को सह नहीं पाती और बेहोश हो जाती है ।

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ७९

२ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ७७

३ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ७८

त्रिलोक के घर से जब रानी भाग कर पिता के घर चली आती है, तब ताराचन्द उस झूठ और फरेब को समझ जाता है, जिसके कारण रानी की यह हालत हुई। ताराचन्द मध्यस्थ लोगों से त्रिलोक को मकान और मोटर देने की तैयारी दिखाते हैं। त्रिलोक इसी जाल में फँस जाता है और वह रानी के पास अपराधी की तरह आकर उसे घर लौट चलने को कहता है। लेकिन मोटर और मकान के लोभ से त्रिलोक आ गया है यह रानी अच्छी तरह जानती है और वह उससे सवाल करती है -

" क्या मैं इतनी भोली हूँ कि समझ लूँ कि आप एकदम पत्थर से मोम हो गये, कि आपको उस रानी में जिसे आपने घर से निकाल दिया था, इतने गुण नजर आने लगे हैं कि आप लेने दौड़े हैं, कि आपके अचानक उससे इतना मोह हो गया है कि आप अपने माँ-बाप, भाई-बहनों को नाराज करके उसे लेकर अलग होने को तैयार हैं ?"[१]

किसी भी बेटी का बाप त्रिलोक जैसे लोलुप व्यक्ति का पेट नहीं भर सकता और कोई स्वाभिमानिनी स्त्री ऐसे लालची के साथ रह नहीं सकती। रानी ने त्रिलोक के आगे बड़ा ही चुभनेवाला प्रश्न खड़ा किया है -

" इस खरीदे हुए, पति को मैं पसंन्द कर सकूँगी ? उसे पति-परमेश्वर समझ सकूँगी ?"[२]

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १०९

२ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२८

रानी और राज के दाम्पत्य जीवन की विफलता हमें सोचने को मजबूर करती है। लेकिन अश्क ने इन्हीं पुरानी मान्यताओं को एक जबरदस्त ठोकर भी दी है - पूरन जैसे पात्रों के सहारे। और समस्या का समाधान सुझाया है। ' अलग-अलग रास्ते ' का पूरन समस्या का समाधान प्रस्तुत करते हुए कहता है -

' दूसरे देशोंमें स्त्रियोंने भगवान के हाथ से अपना भाग्य छीन लिया है। उन्होंने अपने ' अहं ' को, अपने ' स्व ' को, इतना ऊँचा कर दिया है , कि उनके भाग्य को बनाने के पहले भगवान को उनसे पूछना पड़ता है। तुम लोग भी यदि भाग्य को स्वयं अपने हाथो में नहीं लोगी तो जीवनभर तिल-तिल कर जलती रहोगी। ' [१]

पूरन को संतोष है, कि भारत का नारी समाज बदल रहा है, उसके सपने बदल रहे है। अब पिताओं का और पतियों का अनाचार बहुत दिन नहीं चलनेवाला है। वह अपनी बहनों को प्रेरित करता है, कि वे भी आगे बढ़ें और भगवान के हाथ से अपना भाग्य छीन लें।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, कि रानी और राज परस्पर विरोधी प्रकृति की हैं। रानी से पिता कहता है -

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ९१-९२

"तू नहीं जानती, अपने पति के विरूध्द सपने में भी बुरी बात सोचना कितना बड़ा पाप है। तू नहीं जानती, तूने एक ब्राह्मण के घर में जन्म लिया है, तू किसी चांडाल के घर उत्पन्न नहीं हुई।"[1]

तात्पर्य, ताराचन्द चाहता है कि रानी त्रिलोक के घर वापस जाये। लेकिन रानी नव-जागरित नारी समाज की विद्रोह-वाणी है, जो पिता को उसी समय उत्तर देती है -

"आपके धर्म की बातें मैंने बहुत सुन ली पिताजी, आपका धर्म भी पुरूषोंका धर्म है।"[2]

इसतरह पिताजी को चुप कर देती है। और रानी पूरन के साथ चली जाती है। पूरन को अनुभव हुआ है कि जब तक उसकी बहनें अपने पैरोंपर खड़े हो सकने की स्थिति मे नहीं आती, उनपर पिता और पति का अत्याचार होता रहेगा। इसलिए वह रानी को शिक्षिता बनाने के लिए घर छोड़कर चल देता है। घर छोड़ते समय पूरन और रानी कहते हैं -

"स्वाभिमानियों के लिए आदि-काल से यह मार्ग खुला है, राज! आज से हमारे रास्ते अलग होंगे राजो! मैं प्रार्थना करूंगी कि तुम सुखी रहो।"[3]

इससे उसके चरित्र का पूर्ण परिचय प्राप्त हो जाता है।

- -

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२७

२ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२७

३ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२९

लेकिन वहीं राजा है, जो प्राचीन भारतीय नारी समाज के आदर्शोंसे चिपकी हुई है। वह टूट जायेगी, पर तनेगी नहीं। पति ने घर में एक दूसरी को ला दिया है फिर भी वह अपने ससुर के वात्सल्य के भरोसे जीवन बिता देती है। वह रानी की तरह विद्रोह नहीं कर सकती। रानी यदि स्वाभिमानिनियों के आदि मार्ग पर बढने के लिए प्रस्तुत है तो राज का मार्ग भी उसकी भावना में सनातन है। पूरन के क्रांतिकारी विचारों का उसपर कुछ भी असर नहीं पडता।

इसतरह ये दोनों बहने समान परिस्थितियों में पडती हैं, लेकिन इनके रास्ते अलग अलग है। रानी यदि सतेज है और सप्राण है, तो राज शान्त और निस्पन्द, रानी सक्रिय है और राज निष्क्रिय।

विवाह की इस बडी समस्या के साथ ही अश्क ने अन्य समस्याओं को भी इस नाटक में प्रस्तुत किया है। इस नाटक का हर एक पात्र अपना रास्ता चुनता है और इसलिए हर एक पात्र का रास्ता अलग अलग है। इसी दृष्टिसे नाटक का नाम सार्थक ठहरता है।

हमने अभी तक नाटक की कथावस्तु का विवेचन किया। परंतु इस नाटक पर पाश्चात्य प्रभाव दिखाई देता है ऐसा हमने कहा है, तो वह किस प्रकार का है और इस वस्तु का आधार क्या है ? इसका विश्लेषण हमें करना आवश्यक है।

वस्तु चयन का आधार:

अश्क मूलत: समस्या नाटककार है। समस्या नाटकों की वस्तु का चुनाव वर्तमान जीवन की किसी समस्या विशेष के आधार पर होता है। मनुष्य का जीवन विविधांगी है और इसके माध्यम से नाटकीय वस्तु का चयन करना अत्यंत कठिन कार्य है। जीवन में अनेक घटनाएँ आती रहती है,

पर उनमें से कौन सी घटना नाटक का आधार बन सकती है इसका चुनाव नाटककार की पर्यवेक्षण शक्तिपर निर्भर है । अश्क में यह पैनी दृष्टि है । जीवन की विशालता से नाटकीय वस्तु का चयन करने के लिए व्यापक अनुभव की भी आवश्यकता होती है ।

अश्क ने मध्यवर्गीय जीवन के विविध पक्षों को निकट से देखा है । वे कहते है -

" मैंने जीवन की विभिन्नता का आभास पाया है और थोडा बहुत अनुभव भी प्राप्त किया है । समाचार पत्र के एक साधारण रिपोर्टर के रूपमें जीवन-संघर्ष आरंभ करके मैंने अध्यापक, अनुवादक, सम्पादक, वक्ता, विज्ञापन-विशेषज्ञ, वकील, रेडिओ आर्टिस्ट, अभिनेता और सिनारिस्ट की हैसियत से तरह-तरह के अनुभव प्राप्त किये हैं, तरह-तरह के लोगोंसे मिला हूँ और असंख्य दु:खद अथवा सुखद घटनाएँ मेरे मन में सुरक्षित पडी हैं । " [१]

जिन्दगी के इस व्यापक अनुभव के साथ ही साथ नाटय साहित्य से भी उनका बहुत पहले से ही है जिसका उल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा है -

" बचपन से मेरी प्रवृत्ति नाटकों की ओर रही है, बचपन से मैंने व्दिजेन्द्रलाल राय, आगा हश्र, बेताब, राधेश्याम रहमत आदि के नाटक पढे हैं, कालेज और कालेज के पश्चात् अनेक नाटकों में अभिनय किया है और बाद में जब मैं पुस्तकें खरीद सका, मैंने लगभग सभी प्रसिध्द पश्चिमी और पूर्वीय नाटककारों की रचनाएँ

---

१ मैं नाटक कैसे लिखता हूँ, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ३४७

पढ़ी है, नाटक के आवश्यक उपदानों का परिचय पाया है,
पुरातन और आधुनिक ढंग के नाटकों का अन्तर जाना है
और अभ्यास से नाटक कलापर अधिकार प्राप्त कर लिया है।'[१]

जीवन और कला, दोनों के व्यापक अनुभव से जिस असाधारण दृष्टि का निर्माण उनमें हुआ है, उससे वे सामने घटनेवाली घटनाओं में से नाटकीय वस्तु खोज लेते है।

हिन्दी नाटयक्षेत्रमें अश्क प्रथम नाटककार है, जिन्होंने परिवारिक और सामाजिक समस्याओं की व्यावहारिक व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होंने भारतीय जन-जीवन की समस्याओंका चित्र प्रस्तुत कर नाटक को वर्तमान से जोडा जो उसकी बहुत बड़ी शक्ति है। विभिन्न पाश्चात्य एवं पूर्वी नाटककारों का अध्ययन करके उन सभी नवीन तत्वों का उपयोग करने का प्रयत्न उन्होंने किया।

अश्क ने जीवन के अनुभव से ही अपने नाटकों के लिए वस्तु-चयन किया है। जो उन्होंने देखा है, उसी को कलात्मक रूपमें प्रस्तुत किया है। वे अपने नाटकों की कथावस्तु किस प्रकार चुनते है, इसका उल्लेख करते हुये उन्होंने लिखा है कि -

> 'सर्वप्रथम 'थीम' या आधारभूत विचार वे खोजते है, पर
> कभी कभी किसी मनोरंजक पात्र या दृष्य को देखकर उनके मन
> में नाटक लिखने की इच्छा जाग उठती है।'[२]

---

१ मैं नाटक कैसे लिखता हूँ, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ३४५

२ मैं नाटक कैसे लिखता हूँ, नाटककार अश्क, पृष्ठ ३४३

यहाँ तक का विवेचन सिर्फ कथावस्तु के विषय में ही हुआ है। लेकिन इसके आगे चलकर हमें यह देखना है कि अश्कजीने "अलग-अलग रास्ते" में किन किन समस्याओंका चित्रण किया है। इसमे वैवाहिक, पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याएँ भी है और इनका सूक्ष्म अध्ययन हमें अब करना है।

नाटकपर पाश्चात्य प्रभाव:

इब्सेन के नाटकोमें जिस प्रकार मूल समस्या को और निखारने के लिए आधिकारिक कथा के साथ, एकाध प्रासंगिक कथा जोड़ दी जाती है, उसी पध्दति का अनुसरण करते हुए अश्कजीने अपनी इस रचना में अवांछित वैवाहिक सम्बन्धसे मुक्त करने की रानी की कथा के साथ, उसकी बहन राज की, अपने पति ने दूसरा विवाह कर लेनेपर भी, उसी के प्रति अनुरक्त बने रहने की कथा प्रस्तुत की गयी है। यह प्रासंगिक कथा, मिथ्या सामाजिक मान्यताओं एवं जड़ मर्यादाओं से कुंठित हो जानेवाले नारी के व्यक्तित्व को प्रकट करती है। इसी कुंठित व्यक्तित्व को लेकर ही तो अपने पति के दूसरा विवाह कर लेनेपर भी उनके साथ रहना राजने स्वीकार कर लिया है। इस दुर्बल प्रकृति की राज के चरित्र का निर्माण करके लेखक ने रानी के चरित्र के विद्रोही रूप को और अधिक निखार दिया है। राज और रानी के चरित्र अपने साथ इब्सेन के चरित्रोंकी भाँति सामाजिक प्रतीकवादी भावना भी लिये हुवे है। रानी, पुरातन पंथी नारी की प्रतिनिधी है, और रानी आधुनिक सजग व्यक्तित्व की बुध्दिवादी नारी का प्रतिनिधित्व करती है। यह सामाजिक प्रतीकवाद इस नाटक के अन्य चारित्रों में भी प्रकट हुआ है। पूरन अपने नवीन जीवन दर्शन को लेकर आज के प्रगतिशील विचारवालोंका प्रतिनिधि है, उसके पिता तथा अन्य वयोवृध्द व्यक्ति रूढिवादी को प्रकट करते है। बिजली पहलवान, केवल अपने शारीरिक बलपर विश्वास करनेवाले बुध्दिहीन पुरूषोंका प्रतिनिधि है।

प्रोफेसर मदन के चरित्र में लेखक ने उस ढुलमुल प्रकृति के भारतीय नवयुवक को प्रस्तुत किया है जो अपने मेरुदंडहीन चरित्र को लेकर न पूरी तरहसे परंपराप्रिय ही बन पाता है और न ही आधुनिक और अपने चरित्र की इस दुर्बल वृत्तिसे अपने सम्पर्क में आनेवाले अन्य व्यक्तियों के जीवन को भी अपनी ही भाँति दुखी बना देता है।

इब्सेन के नाटकों की भाँति यह रचना भी कथावस्तु के उपसंहार भाग को ही लेकर प्रारंभ होती है, जब रानी के, उसके पतिव्दारा छोड दिये जाने के बाद उसके सामने अपने को लोक मर्यादा के बंधन से मुक्त करके अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की घोषणा करने की समस्या खडी हुई है। शेष कथांश तो विभिन्न पात्रोंकी वार्तामें धीरे धीरे प्रकट हुआ है। इब्सेन के बुध्दिवादी नाटकों की भाँति इस रचना का भी उद्देश्य, समाज की जड मान्यताओं के प्रति विरोध का भाव जागरूक करके एक नये जीवन दर्शन के ग्रहण की प्रेरणा प्रदान करना है। पाश्चात्य प्रभाव की दृष्टिसे यह नाटक अपने रंग-निर्देश की ओर ध्यान आकर्षित करता है। इब्सेन के रंग निर्देशोंकी शैली का प्रभाव अश्कजी की इस रचनामें और भी देखने को मिलता है।

भारतीय परंपरा के अनुसार विवाहसंस्था:

वैवाहिक समस्या देखते समय हमें पहले भारतीयोंकी दृष्टिसे विवाह की संकल्पना, विवाह का उद्देश्य, विवाह संस्था का उद्गम और विवाह के प्रकार आदि प्राथमिक विषयोंका विवेचन करना आवश्यक है।

विवाह:-

विवाह एक संस्कार है, जिससे विवाहेच्छु वधू-वर ब्राह्मण, मित्र और अग्नि के समक्ष पति-पत्नी के रूप में संबध्द होते है, उसी संस्कारको विवाह कहते है। विवाह को और भी पर्यायवाची शब्द होते है -

पाणिग्रहण: इसका मतलब यह है कि, वर वधू का हाथ पत्नी के रूप में लेता है।

उपयम: वधू के निकट जाना या उसको स्वीकार करना।

परिणय: वधू का हाथ पकड़कर अग्नि के चारों ओर फेरे लेना।

विवाह-उव्दाह: वधू को पिता के घरसे अपने घर ले जाना।

ब्राह्म विवाह पध्दति में ये सभी प्रकार होते है।

विवाह संस्था:

मानव समाज में होनेवाली संस्थाओं में से यह मुख्य संस्था है। सोलह संस्कारों में से विवाह संस्कार अग्रगण्य है। विवाह से स्त्री-पुरूष संबंधोंका नियमन होता है।उसी तरह पति-पत्नी के होनेवाले बच्चोंका सामाजिक स्थान भी निर्धारित किया जाता है। परिवार संस्था विवाह संस्था पर ही निर्भर होती है। इसलिए विवाह के संस्कारोंपर सामाजिक नीति अपना प्रभाव डालती है। हमारी परम्परा में विवाह संस्कार की तरफ जितना भी ध्यान केंद्रित किया जाता है, उतना अन्य किसी संस्कारों में नहीं दिया जाता। इस संबंध में वधू-वरोंका पावित्र्य और कुल का पावित्र्य मुख्यत: देखा जाता है। क्योंकि इसी पर ही उनका संस्कार श्रेयस्कर सिध्द हो जाता है। विवाह संस्कार के समय जो मंत्र

पाठ होते है, वे पावित्र्य सूचक ही है। इसके अलावा वंश-जाति, उप-जात सामाजिक स्तर, अर्थोत्पादन की क्षमता, निरोगित्व, अव्यंगत्व आदि का निरीक्षण परिक्षाण करके ही विवाह का जिक्र किया जाता है।

विवाह संस्था परिवार संस्था से ही मर्यादित नहीं होती, बल्कि उससे सामाजिक अनुबंध का पालन होता है। सगुण, नीतिमान, चारित्र्य-संपन्न और परोपकारी विवाह-दम्पति ही समाज का उत्कर्ष करने में सहायता करते हैं। इसके विपरीत गुणरहित और अनीतिमान दम्पति समाज के विघटन का कारण बन सकते हैं। विवाह के कारण स्त्री-पुरूष, समाज-विघातक कार्य नहीं कर सकते। अविवाहित मानव समाज में रहकर भी समाज से वंचित रहता है। वह समाज से घुल-मिल नहीं जाता। लेकिन विवाह के बाद वह समाज से एकरूप हो जाता है। विवाह से उसके रिश्ते बढ़ जाते है, और जीवन में व्यापकता आ जाती है। उसके कर्तव्य निश्चित हो जाते हैं, इसलिए वह जिम्मेदारी के साथ बर्ताव करता है।

विवाह का प्रयोजन:

धर्मप्रजासम्पति: प्रयोजनं दार संग्रहस्य। [१]

अर्थात् मिताक्षराकार के मतानुसार धर्म सम्पति और प्रजा-सम्पति ही विवाह का प्रयोजन है। उसके मतसे आपस्तंव भी सहमत है। समाज का अस्तित्व अबाधित रखने के लिए और उसका उत्कर्ष करने के लिए समाज मे सुप्रजा का निर्माण होना अत्यंत आवश्यक है। और यदि सुप्रजा का

---

१ याज्ञ.स्मृ.१.७८ पर की टीका।

निर्माण करना है, तो पहले पति-पत्नी का आपस में अनुरक्त, सच्छील और कर्तव्यदक्ष होना जरूरी होता है। बचपन में ही बच्चोंपर यदि अच्छे संस्कार हो तो बाद में समाज को उससे फायदा ही होता है। इसीलिए पति-पत्नी यदि धर्माचरण करें, तो सुप्रजा का निर्माण हो ही जायेगा। और इसीलिए तो विवाह का संस्कार होता है। विवाह के जो मंत्र और प्रार्थना होते है, उसमेंसे यही कहा जाता है। वधू का हाथ थामकर अग्नी के समक्ष जब फेरे लिए जाते है, तो उसी समय वर को यही मंत्र बोलना पडता है। वही -

तावेद विवहाव है। प्रजां प्रजनयाव है,
संप्रियौरोचिष्णू: सुमनस्यमानौ।
जीवेम शरद: शतम्। [1]

इसका मतलब हम दोनों विवाह के बन्धन में एक होकर प्रथा का निर्माण करेंगे। आपस में प्रेम करके एक दूसरे को प्यारे हो जायेंगे। और एक दूसरे से पवित्र मन रखकर सौ बरस तक जीयेंगे।

विवाह के समय जो मंत्र सुनाये जाते हैं, उनमें वधू-वर एक दूसरे से जो कामनाएं व्यक्त करते है, वे व्यावहारिक होती हैं ही साथ ही धार्मिक और नैतिक भी होती है। विवाह के बन्धनमें पडनेवाले पति-पत्नी को धर्म, अर्थ और काम इन्हीं पुरूषार्थ को एक दूसरे के सहकार्य से संपादित करना पडता है। इन सबको साध्य करने के लिए पति-पत्नी के लैगिंक संबंधमें निष्ठा का होना आवश्यक है, ऐसा वेद और धर्म शास्त्र का आग्रह है।

और इसीलिए अन्य धर्म में एक अनुबंधमात्र के स्वरूप से मनाया जानेवाला विवाह हिंदू धर्म में एक पवित्र संस्कार समझा जाता है, अनुबंध के नियमों का यदि भंग हो तो वह नष्ट होता है, और दम्पत्ति विभक्त हो जाते है,

---

१ आश्व. गृ.सू. १.७.२२।

परंतु संस्कार से बध्द हुअे वधू-वर यदि दुर्दैव के कारण एक दूसरे से अलग हो जाएँ फिर भी वियोग के कारणोंकी तीव्रता कम होने के बाद वे दोनों इकठ्ठा होकर पुन: गृहस्थी चला सकते है। और यदि वे इकठ्ठा नहीं आये तो भी उनका पति-पत्नि का नाता अटूट ही रहता है। क्यों कि वह नाता अनुबंध से नहीं, धर्म से जुड़ा हुआ होता है।

अतिप्राचीन काल में विवाह संस्था अस्तित्व में थी ही नहीं ऐसा कई विव्दानों का मत है। इसके आधार स्वरूप महाभारत की एक कथा कही जाती है - जिस प्रकार जानवरों में लैंगिक संबंध के लिए पति-पत्नी का ही नाता होना आवश्यक नहीं होता, उसी प्रकार की समाज की अवस्था उत्तर कुरू देश में थी, ऐसा उद्दालक ऋषि और उनका पुत्र श्वेतकेतू इनके संवाद में कहा है।[१]

इसके विपरीत विवाह संस्था का प्राचीनत्व कहने के लिए तांड्य ब्राह्मण में एक कथा कही गयी है। वह इसीप्रकार -

> ' पृथ्वी और आकाश दोनों पहले एक स्थान पर रहते थे। बादमें पृथ्वी दूर जाने लगी। दोनों को यह अच्छा नहीं लगा। इसलिए दोनों ने एक दूसरे से कहा -' हम विवाह करके एकत्रित जीवन बितायेंगे।'

इसीप्रकार पृथ्वी और आकाश का यह आदर्श मानव ने मान्य किया और अपने समाज में विवाहसंस्था का निर्माण हुआ, यह तात्पर्य इस कथा से मिलता है। ऋग्वेद में तो विवाह का स्वरूप अत्यंत मंगल और उदात्त दिखाई देता है।

---

१ आदिपर्व, अध्याय १२२।

विवाह प्रकार:

प्राचीन कालमें वधू-वर विवाह के बन्धन से बध्द होते थे। उसी विवाह के आठ प्रकार मनूने बतलाये हैं -

ब्राह्मो दैवस्तथा चार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः[१]

ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच इस प्रकार विवाह के आठ प्रकार हैं। इनमें पैशाच सबसे अधम माना गया है।

गान्धर्व विवाह:

परिणय सूत्र से बांधना अर्थात् स्वेच्छासे विवाह करना।

आन्तरराष्ट्रीय- प्राजापत्य विवाह:

सम्मान पूर्वकिया जाता है।

राक्षस विवाह:

इच्छा के विरूध्द उपहार स्वरूप किया जाता है।

पैशाच विवाह:

बलपूर्वक विवाह सम्बन्ध स्थापना।

---

१ मनु ३.२१

इसके अतिरिक्त एक विवाह, बहुविवाह, अन्तर्जातीय विवाह, विधवा विवाह, पुनर्विवाह, अनमेल विवाह ऐसे वैवाहिक सम्बन्धों के अनेक रूप हैं।

अभी तक हमने विवाह की प्राथमिक बातोंपर विचार किया और अब हमें देखना है - वैवाहिक जीवन में किन किन समस्याओं को झेलना पडता है।

वैवाहिकजीवन - सम्बन्धी समस्याएँ:

मनुष्यप्राणी समाजप्रिय प्राणी है। समाज में अनेक तरह के लोग होते हैं। जाति-पाँति, धर्म, रहन-सहन अलग अलग होते हैं, फिर भी समाज में अनेक लोग इकठ्ठा होते हैं और संस्था स्थापित करते हैं। इसी प्रकार अनेक प्रकार की संस्थाएँ होती हैं। परिवार संस्था, विवाह-संस्था और अन्य अनेक सामाजिक संस्थाओं का उदगम होता है। तो हर एक संस्था अपनी विशिष्टता लेकर आगे बढती है। साथ ही साथ उसकी कई समस्याएँ भी होती हैं।

विवाह दो व्यक्तियों (भिन्नलिंगी) की आत्मा का मिलन है। दोनों एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। जहाँ दोनों व्यक्तिओं में सामंजस्य होता है, वहाँ हमें सुखी सांसारिक जीवन दिखाई देता है। और दूसरी तरफ पति-पत्नी में यदि किसी भी प्रकार का मतभेद चाहे वह वैचारिक हो, आर्थिक हो और अन्य किसी भी प्रकार का हो, वहाँ संसारमें विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। दोनों की कभी भी पटती नहीं और दोनों एक दूसरे से अलग अलग होना चाहते है और उसी कारण उनके रास्ते अलग अलग होते हैं - कभी संयोग न होने के लिए।

विवाह - समस्याश्रयी नाटक :

समस्या नाटको में अवतरित विवाह की समस्या, नारी स्वातंत्र्य आन्दोलन एवं सेक्स मनोविज्ञान के कारण बदलती हुई वैवाहिक मर्यादा दृष्टि का प्रतिफल है। नयी चेतना के फलस्वरूप आधुनिक नारियों में अपने निजी व्यक्तित्व के प्रति सजगता बढ़ी है। वैवाहिक बन्धन की रूढ़िवादी कृतज्ञताओं के निर्वाह के प्रति उनके मन में बौध्दिक विद्रोह अंकुरित हुआ है। परिणामत: पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन पर विघटन के चिन्ह प्रकट हुए हैं, दाम्पत्य जीवन में सामंजस्य के लिए नये आधारोंकी माँग की जाने लगी है।

समस्या नाटककारोंने प्रस्तुत समस्या के संदर्भ में दाम्पत्य जीवनमें लक्षित ढोंग, घुटन, असन्तोष, विच्छेद, आत्महत्या एवं विवाह के समाजानुमोदित सुलभ मूल्यों में होनेवाली क्रान्ति के अनेक चित्र उद्घाटित किए हैं। प्रचलित वैवाहिक धर्म की संकीर्णताओं के विरूध्द यौन-मनोविज्ञान की बढती हुई जानकारी से जो क्रान्ति हुई है, उसका ही परिणाम है अन्तर्जातीय विवाह, प्रेम-विवाह, माता पिता एवं समाज के अनुमोदन से निरपेक्ष विवाह आदि के प्रति बुध्दिवादी समुदायमें प्रवाह आया है। और इसी परम्परासे भिन्न नये प्रयोग ने व्यक्ति और समाज के जीवन में संघर्ष पैदा कर दिया है। और इससे सामाजिक एवं पारिवारिक क्षेत्रोमें बहुतसी समस्याएँ पैदा हुई है।

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के समस्या नाटकों में मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन की समस्याएँ अत्यन्त समर्थ रूप में अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने शिक्षिता युवतियोंके असन्तुलित दाम्पत्य जीवन, पारिवारिक विषमताओं एवं यौन कुण्ठाओं, घुटन, असन्तोष, विच्छेद आदि का सूक्ष्म विवेचन किया है।

आ.बाजपेयी के शब्दोंमे -

' मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन की जितनी अन्दरूनी और यथातथ्य जानकारी ' अश्क ' की कृतियों में व्यक्त हुई है, अन्यत्र नहीं मिलेगी। ' वस्तुत: वे हिन्दी के सर्वाधिक समर्थ समस्या नाटककार है। ' [१]

हमे अश्क का नाटक ' अलग-अलग रास्ते ' में आनेवाली वैवाहिक जीवन सम्बन्धी समस्याएँ देखनी है।

नाटकों में व्यक्त हुई समस्याओं को सुविधा की दृष्टिसे मुख्यत: दो वर्गोंमें विभाजित किया जा सकता है - (१) व्यष्टिगत समस्यायें (२) समष्टिगत समस्यायें।

१) <u>व्यष्टिगत समस्यायें:</u>

व्यक्ति समाज की ही एक इकाई है। एक व्यक्ति समाज को प्रभावित करता है, तो अपने जीवन से और समाजसे भी वह प्रभावित होता है। दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। व्यष्टिगत समस्याओंमे - प्रेम और विवाह, नारी पुरुष के सम्बन्ध, पिता-पुत्र के सम्बन्ध, व्यक्ति का अन्तर्द्वन्द्व और अस्तित्व रक्षण की समस्या तथा उसके व्यक्तित्वसे सम्बन्धित विविध समस्याओं को रखा जा सकता है। व्यष्टिगत समस्याओं को ' अलग अलग रास्ते ' नाटकमें प्रमुखता से देखा जाता है।

---

१ नया साहित्य, नये प्रश्न [illegible], नन्ददुलारे बाजपेयी, पृष्ठ १९

२) समष्टिगत समस्यायें:

सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली समस्याएँ समष्टिगत समस्याओं के अन्तर्गत आती है। ये समस्याएँ यद्यपि व्यष्टिगत समस्याओं से उद्भुत होती है, तथापि इनका प्रभाव सारे समाजपर पडता है। इन समस्याओं का परिवेश व्यापक होता है। इन समस्याओं के अन्तर्गत राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिवेश से सम्बन्धित सत्ताधारियोंके भ्रष्ट एवं अनैतिक आचरण से उत्पन्न समस्याएँ भ्रष्टाचार, आर्थिक विषमता से सम्बध्द, बेरोजगारी, रिश्वत, राजनीतिक असंतोष, अवसरवादिता, सरकारी कर्मचारियों के आचरण, धर्म के क्षेत्र में फैले अन्धविश्वास, बाह्याडम्बर आदिसे सम्बन्धित समस्याओं को रखा जा सकता है। उदा. मि.अभिमन्यु, शुतुरमुर्ग, रक्त-कमल आदि नाटकोंकी समस्याएँ इस प्रकारकी है।

१) वैवाहिक परिस्थितिमें परिवर्तन:

'अलग-अलग रास्ते' नाटक में लडका अथवा लडकी के इच्छानुसार विवाह न होकर उनके माता-पिता (संरक्षक) की इच्छा से हो रहा है। ये जो संरक्षक है वे नवीन जीवन मूल्यों और मान्यताओं को समझने में असमर्थ रहते है। वे पुराने विचारों के आधारपर ही नये को मापने की कोशिश करते है। इस नाटक में पुरातनवादी पिता के मत का विरोध करते हुए पूरन कहता है की -

> 'आपने उनकी इच्छा तो जान ली। उनके लडके की इच्छाभी तो जानिए। वह भी आपकी लडकी को पाकर धन्य होगा की नही।' [१]

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ८९

जिनका जीवन नष्ट हुआ है, उनपर यह कथन गहरा आक्षेप है। आज कल विवाह भावनाओं और विचारों की समता के आधारपर हो रहे है। प्रत्येक लडकी का पिता सुन्दर, स्वस्थ और शिक्षित दामाद चाहता है, लेकिन इसका विचार नहीं कर पाता की बेटी और दामाद के विचारों और गुणों में कहाँ तक मेलजोल है। दोनों पक्ष बडे लालची होते है, इसलिए वह कुछ छल-पदम् का प्रयोग भी करते है। और इसका परिणाम विवाहित दाम्पत्य को भुगतना पडता है और वैषम्य बढ जाता है। इस स्थिति का वर्णन करते हुए पूरन कहता है -

"ब्याह तो आजकल अन्धेरे में तीर मारने के बराबर है। निशाने पर लग गया तो ठीक, नहीं तो हाथ से निकला तीर तो वापस आता नहीं। जब दोनों पक्ष झूठ बोलनेमें एक दूसरे से बाजी मारने की फिक्र में हो, तो सच का पता पाना मुश्किल है।" १

युग परिवर्तन के साथ आज की वैवाहिक परिस्थितीयाँ बदल गई है। आज की लडकी पहले शिक्षित होकर अपने पैरोंपर खडी होती है और बाद में शादी। वह भी लडके को अच्छी तरह देखकर, उसके बारेमें अन्य दृष्टियोंसे परीक्षा करके उसे पसंद करती है। वह अपना बोझ पति पर नहीं डालना चाहती। और आज समाज में यही आवश्यक है ही। तभी स्त्री बरसोंकी गुलामी से मुक्त हो जायेगी।

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ६२

२) परम्परा के प्रति विद्रोह:

' अलग-अलग रास्ते ' में परम्परा के प्रति विद्रोह करनेवाले मुख्यत: दो पात्र है - रानी और पूरन। अंशत: मदन भी इसका उत्तराधिकारी है।

' अलग-अलग रास्ते ' का मदन वैवाहिक रूढियों और परम्पराओं को ठोकर मारनेवाले उन मध्यवर्गीय युवकों का प्रतिनिधी है, जो विवाह को -हृदय का सौदा पारस्परिक प्रेम-बन्धन समझाता है। पण्डितों तथा पुरोहितों व्दारा बलात ले मढ देने को बन्धन नहीं मानता। इसीलिए वह राज से स्पष्ट शब्दोंमे कहता है -

> ' बारातियों, पुरोहितोंने, पंडितों ने, हमारे माता-पिता ने,
> यज्ञ की अग्नि ने हमें एक दूसरे के शरीर सौंप दिये है,
> -हृदय तो नही सौंपे।'[१]

पर एक प्रोफेसर होने के नाते मदन को विवाह करने के पूर्वही यह सोचना चाहिए था, राजो की बलि चढाने के पश्चात नहीं।

राजी का बडा भाई पूरन यथार्थवादी विचारोंसे प्रभावित है। उसके विचारानुसार नारी को स्वाभिमानिनी बनना है, उसे अपनी प्रतिष्ठा बनानी है। इसलिए पतिव्दारा सताई गई रानी को वह समझाता है -

> ' तुम चिन्ता न करो रानी। पिताजी पति को पत्नी का
> परमेश्वर समझाते हो, तो समझें, मै ऐसा नहीं समझाता।
> पति, मेरे निकट पत्नी का परमात्मा नहीं, उसका साथी है
> और उस साथ को निभाने का सारा उत्तरदायित्व पत्नीपर
> ही नहीं, पतिपर भी है।'[२]

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ८१।
२ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ६९।

इस प्रकार पूरन परम्परागत आदर्शोंका पूर्ण विरोधी है। वह विवाह को भाग्य का विषय भी नहीं मानता। उसकी दृष्टिसे भाग्य के नाम पर रोना मूर्खता है। इसलिए उसने रानी को समझाया कि,

> ' रानी, दूसरे देशोंमें स्त्रियोंने भगवान के हाथ से अपना भाग्य छीन लिया है। उन्होंने अपने ' अहं ' को, अपने ' स्व ' को इतना उँचा उठा लिया है, कि उनके भाग्य को बनाने के पहले भगवान को उनसे पूछना पडता है। तुम लोग भी यदि अपने को स्वयं अपने हाथों में नहीं लेती तो जीवनभर तिल-तिल कर जलती रहोगी। '[१]

इस नाटक की नारी एक प्रगतिशील पात्र है। वह अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग है। रानी को उच्च शिक्षा नहीं मिली है, फिर भी उसमें जिस प्रगतिशीलता के दर्शन होते हैं, आधुनिक भारतीय नारी शिक्षित होकर भी अभी उस स्थिति तक नहीं पहुंच सकी है। रानी की प्रगतिशीलता को उभारने के लिए नाटककार ने पूरन की सृष्टि की है, जो निरन्तर रानी को रूढियों से विद्रोह करने के लिए सचेष्ट रहता है।

जब रानी को पिता त्रिलोक के पास वापस जाने को कहता है, तो वह उत्तर देती है -

> ' आपके धर्म की बातें मैंने बहुत सुन ली पिताजी, आपका धर्म भी पुरूषोंका धर्म है। '[२]

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ९१-९२।

२ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२७।

और उसे चुप कर देती है। और पूरन के साथ चली जाती है। जाते समय वह राजोसे कहती है -

"स्वाभिमानियों के लिए आदि-कालसे यह मार्ग खुला है राज। आजसे हमारे रास्ते अलग होंगे राजो। मैं प्रार्थना करूँगी कि तुम सुखी रहो।"[१]

इस प्रकार इन पात्रोंमे जो परम्परा के प्रति विद्रोह की भावना है, यही भविष्यमें विवाहित स्त्रियोंका वरदान ठहरेगी, इसमें संदेह नहीं। इसीलिए इसी नाटक में इन पात्रों का होना आवश्यक है।

३) पुनर्विवाह:

पुनर्विवाह की पध्दति हमारे यहाँ उतनी प्रचलित नहीं है। फिर भी आज कल रानी और राज जैसी स्त्रियाओंका वैवाहिक जीवन का सुख नहीं मिलता और जो अपने पति के सुख से वंचित है, उनके लिए पुनर्विवाह एक पर्याय रहता है। क्योंकि जिन्दगी का इतना लम्बा सफर अकेले तो नहीं कर सकते ? इसके लिए एक अच्छा साथी चुनना कोई अनुचित नहीं होगा।

"अलग-अलग रास्ते" में पूरन का भी विचार इससे मिलता है। जब राजो के पति ने उसका कोई दोष न होनेपर भी दूसरा ब्याह कर लिया, तो पूरन को गुस्सा आता है और कहता है कि -

"पढ लिखकर अपने पाँवपर खडी होना सीखेगी"।[२]

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२९

२ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२०-१२१

ब्रजनाथ कहता है -

" बेटा पढ़ना-लिखना लड़की को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए होता है, किन्तु ब्याह का केवल यही पक्ष तो नहीं, दूसरा भी है। ब्याह का केवल आर्थिक पक्ष होता, तो राजे-महाराजे अपनी लड़कियों के ब्याह न करते।"[१]

तब पूरन कहता है -

" राजो का भी दूसरा ब्याह हो सकता है। पुरूष एक स्त्री के होते दू सरा ब्याह कर सकता है, तो स्त्री क्यों नहीं कर सकती, विशेषकर पुरूष के ठुकरा देने पर"।[२]

इसी प्रकार नाटककार ने पूरन जैसे क्रांतिकारी पात्र के व्दारा पुनर्विवाह एक वैवाहिकसमस्या बन गई है यह स्पष्ट ही किया है।

४) वैवाहिकजीवन के प्रति नवीन क्रांति (नव जागरण):

यदि किसी का भी वैवाहिक जीवन सुखी नहीं हो, तो वह व्यक्ति कितनी देर तक इन्तजार कर सकती है ? चाहे वह स्त्री हो या पुरूष। लेकिन पुरूषोंकी बात अलग होती है, वह कहेगा- एक नही तो दूसरी। परंतु इसी समय स्त्री की हालत क्या होगी ? किसी ने भी नहीं सोचा होगा। और इस स्थिति में असफल वैवाहिक दाम्पत्य-जीवन से उब्कर नारी क्रांतिकारी बनती है। अपना निर्णय खुद लेने लगती है।

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२१।

२ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२१।

'अलग-अलग रास्ते ' की रानी नव-जागरण का मूल उत्स है। वैवाहिक जीवनमें नवीन क्रांति उन्होंने प्रस्तुत की है। आज समाज को ऐसी ही स्त्री की आवश्यकता है, जो अबला न कहलाये, बल्कि सबला कहकर ही सभी उसे पुकारे। इस नाटकमें पूरनका कहना है -

'ब्याह तो आजकल अंधेरे में तीर मारने के बराबर है। निशाने पर लग गया तो ठीक, नहीं तो हाथ से निकला तीर वापस आता नहीं।'[१]

ब्याह के इसी विडंबना के प्रति नाटक में विरोध दिखाया है। रानी असमंजित विवाह का विच्छेद करती है और इस प्रकार वैवाहिक जीवन के प्रति नवीन क्रान्ति का संदेश देती है।

ताराचंन्द जब रानी से कहता है -

'तू अपने पति के घर जायेगी या इस घरमें भी न रहेगी।'[२]

तो रानी झट चल पडती है और कहती है -

'मैं इस घरको भी नमस्कार करती हूँ।'[३]

इस तरह वह स्वन्तत्र व्यक्तित्व खडा करना चाहती है।

५) पतिपरायण नारी (विषम वैवाहिक जीवन):

नारी पतिपरायण होकर भी उसे विषम वैवाहिकजीवन बिताना पडता है। यह भी एक वैवाहिक समस्या है। भारतीय हिंदू स्त्री अपने पति को परमेश्वर ही मानती है - भला वो/वह कितना ही अच्छा हो या बुरा। परंतु हर पुरूष वैसा नहीं होता है एक पत्नीव्रत श्रीरामचंद्र जैसा। और

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ६२

२ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२८

३ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२८

इसीलिए वैवाहिक जीवनमें बाधा आ जाती है। उसका परिणाम स्त्रियों को ही भुगतना पडता है।

' अलग अलग रास्ते ' की राज पति परायण स्त्री है। फिर भी उसका वैवाहिक जीवन विफल है। क्योंकि राज का पति मदन राज के सिवा सुदर्शनासे प्रेम करता था और ब्याह भी उसीसे कर लिया। राज से विवाह होनेपर भी वह उसे भूल न सका। अतएव राज को पति के -हृदय का प्रेम नसीब नहीं होता। वह अपने विफल वैवाहिक जीवन का परिचय देते हुए रानी से कहती है -

' जब कभी मैं कहती हूँ, आप जिसे चाहे शौकसे प्यार करें, पर मुझे कभी न ठुकराइए, तो मुझे बाहों में भींच लेने पर स्पष्ट लगता, जैसे मनसे नहीं, केवल मेरे होनेसे विवश होकर प्यार करते है। और कभी इस तरह प्यार करते करते अपने बाल नोचने लगते है। [१]

उस समय मदन कहता है -

' मैं कायर हूँ, कायर। [२]

परंन्तु विफल वैवाहिक जीवन के प्रति वह परम्परा भीरू है। कुंठित होकर भी उसके मन में ऐसे विषम वैवाहिक जीवन के प्रति विद्रोही भाग नहीं उठता। पति के प्रेमसे वंचित होकर भी सतीत्व के प्रति उसे मोह है।

- -

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ७७।

२ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ७७।

8650
A

जब ससुर उसे लेने आते हैं, तो वह पति के घर जाने के लिए तैयार होती है। उसके मन में किसी प्रकारका विद्रोह स्फुरित नहीं होता। वह कहती है -

> " मैं यहाँ सुलगती रहूँगी जीजी। (पिता से) मैं आपको पाँव पडती हूँ पिताजी, मुझे इसी घड़ी भेज दीजिए। मेरे देवता-तुल्य ससुर को और न अपमानित कीजिए। " [१]

वैवाहिक जीवनकी प्रस्तुत विषम स्थिति में भी राज का आदर्श व्याख्यान एवं बुझी हुई प्रतिक्रिया उसके मृत व्यक्तित्व के प्रतीक है।

६) अनमेल विवाह:

बालक तथा तरूणी का पाणिग्रहण, तरूणी का वृध्द के साथ गठबंधन, कन्या के पिता अथवा वर के पिता की स्वार्थांधता के कारण वर-वधू की संगति की उपेक्षा, धन-बल के आधार पर जबर्दस्ती स्थापित होने वाले वैवाहिक सम्बन्ध, ऋणमुक्त होने के लिए कन्या सम्प्रदान लोभवश कन्या की बिक्री आदि अनमेल विवाह के विविध रूप एवं कारण है और इन सबकी सफल अभिव्यक्ति हिन्दी नाटकों में हुई है।

अलग अलग रास्ते में रानी का वैवाहिक जीवन अनमेल विवाह का उत्तम उदा. है। उसका पति त्रिलोक और उसके घरवाले भी ससुर से मकान और मोटर न मिलने के कारण राजी को ताने देते है और

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ १२२।

उसका परिणाम वहीं होता है, जो होना ही चाहिए था। इसीप्रकार वैवाहिक जीवन यह अनमेल ही रहा।

७) आंतरजातीय विवाह:

वैसा देखा जाय तो आजकल आंतरजातीय विवाह ज्यादा हो रहे है। इसीलिए उसका इतना औत्सुक नहीं रहा जितना पहले था। लेकिन 'अलग-अलग रास्ते' का मदन आंतरजातीय विवाह करके समस्या पैदा कर देता है।

राजो जैसी अच्छी लड़की से शादी करके भी सुदर्शनासे प्रेम करता है और विवाह भी। सुदर्शना उनकी जाति की नहीं है। लेकिन अश्क ने अपने नाटकों में आंतरजातीय विवाह का सूत्रपात किया है।

जब रानी और पूरन को यह बात मालूम हुई तो दोनों भी चिढ़ गये। रानी कहती है -

'जाति से वह खत्री है।' [१]

पूरन कुत्सित भाव से कहता है कि -

'जाति का भी विवाह से कोई सम्बन्ध नहीं। उसके लिए संगिनी चाहिए, जिसे अपने साथी की भावनाओं और विचारों से पूर्ण सहानुभूति हो।' [२]

इसी प्रकार इस नाटकमें आंतरजातीय विवाह भी वैवाहिकजीवन की समस्या बन कर खडी हुई है।

---

१ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ८८।

२ अलग-अलग रास्ते, उ.ना.अश्क, पृष्ठ ८८।

वैसे तो हमने वैवाहिक जीवन में आनेवाली समस्त समस्याओंका तो विवेचन नहीं किया है। फिर भी जो सम्यक् रूप से दृष्टिगोचर होती है इनका विश्लेषण किया है।

वैवाहिक जीवन की कुछ अन्य समस्याएँ:

कभी कभी वैवाहिक सम्बन्धों के स्थापने में विचित्र समस्याएँ खडी हो जाती है।

१) पडोसी के कारण:- पडोसी रहनेवालों से न बननेपर वैवाहिक जीवन में बाधा आती है और समस्या पैदा होती है।

२) दामाद को पालतू कुत्ते की तरह समझना:- विशेषकर घरजमाई जो होते है, उनकी ऐसी अवस्था होती है।

३) नौकरी में ऊँचे पदपर:- नौकरी के पद का घरमें रोब दिखाने के कारण घर में समस्या उत्पन्न होती है।

४) सहशिक्षा के कारण वैवाहिक सम्बन्धोंकी पवित्रता नष्ट होने की समस्या।

५) लडकी को अनुचित रूपसे देखने की प्रवृत्ति।

६) अर्थ के कारण:- जो लडकी अथवा जिस लडकी के अभिभावक केवल लडके की जेब और 'बैंक-बैलेंस' को देखते है, वे अस्थायी विवाह की समस्या को अधिकसे अधिक बढाने का अपराध करते है। ऐसे दृष्टिकोण के कारण लडकियों का महत्व वेश्याओं से अधिक नहीं रह जाता।

वैवाहिक समस्याओंका निदर्शन:

दहेज समस्या का प्रचलन विवाह संस्था का सबसे बडा अभिशाप बन गया है। इसके कारण समाज के वातावरणपर बुरा असर होता है। तथा पारिवारिक जीवन अशांत हो जाता है।

इसीलिए हमें चाहिए की विवाह संस्था की समस्याओंका निर्मूलन करनेवाली यदि संस्था प्रस्थापित करें, तो निश्चय ही इसका परिणाम अच्छा होगा और कई दम्पत्ती अपना जीवन सुखी बनायेंगे।

-00000-